रिकॉर्ड :– दुःखियों पर कुछ रहम करो..... ॐ पिताश्री 18/6/64

ओम् शांति। बच्चों ने गीत सुना कि हम बच्चे हैं। तुम्हारे तो ज़रूर वह बाप है। अब बाप को बच्चे कब सर्वव्यापी नहीं कहते। लौकिक बाप के भी बच्चे उनको बाप कहेंगे। ऐसे नहीं कहेंगे, हमारा बाप सर्वव्यापी है। यह बेहद का बाप बैठ समझाते हैं, तुम सब बच्चे हो, वह तुम्हारा बाप है, जिसको प०पि०प० कहते हो। परमात्मा को सुप्रीम सोल भी कहते हैं। परम (मा)ना सुप्रीम, आत्मा (मा)ना सोल। तो यह ज़रूर है, बच्चे सब हैं और बाप एक है। सब भक्त एक भगवान को याद करते हैं। जिसको याद किया जाता है उनका ज़रूर नाम–रूप, देश–काल होता है। उसको बेअंत नहीं कहा जा सकता। मनुष्य ईश्वर बाप को बेअन्त कहते आए हैं– उसका कोई अंत पा नहीं सकते और फिर कहते– सर्वव्यापी है। यह तो बड़ा अनर्थ हो गया! पत्थर–ठिक्कर, कुत्ते–बिल्ले सबमें ईश्वर है, उनको फिर बेअन्त कैसे कहते हैं! बच्चे बाप को भूल गए हैं; इसलिए सारी मनुष्य सृष्टि नास्तिक, पतित कही जाती है। हर एक नर–नारी पतित हैं तब तो पतित से पावन बनाने वाले को याद करते हैं। इस दुनिया में कोई को भी महान आत्मा नहीं कहा जा सकता। पवित्र आत्मा पतित दुनिया में हो नहीं सकती। बापू गाँधी जी भी कहते थे– पतित–पावन सीता राम। मनुष्य के लिए कहते थे, पानी की गंगा लिए तो नहीं कहा। यह है झूठ। झूठी माया, झूठी काया... है ही झूठखंड। भारत सचखण्ड था, जबकि नई दुनिया में नया भारत था। अब वही भारत पुराना हो गया है। भारत जब नया था तो उसको स्वर्ग कहा जाता है, जिसको 5000 वर्ष हुए। फिर त्रेता में दो कलाएँ कम हुईं। इस समय तो कलहयुग है। इनको कहा जाता है पुरानी दुनिया ... पुराना भारत। वर्ल्ड नई भी होती है, पुरानी भी होती है। अब है पुरानी वर्ल्ड, सब मनुष्य नास्तिक हैं; इसलिए इसको दुखधाम कहा जाता है। फिर इस दुखधाम को सुखधाम तो एक ही बाप बनाय सकते हैं। बरोबर सब पतित हैं। साधु–संत–महात्मा सब पतित हैं। कहते हैं ईश्वर, रचता बेअंत है। अरे, रचता तो ठहरा बाप। बाप को बेअंत, सर्वव्यापी कैसे कह सकते! पत्थर बुद्धि कुछ भी समझते नहीं हैं। भारत जो पावन था, अब पतित बन गया है। जब प्युरिटी थी तब पीस–प्रॉसपेरिटी थी, निरोगी काया थी, भारत की आयु, एवरेज बड़ी थी। अब तो बहुत छोटी है। भारत रोगी कब से बना है, दुनिया नहीं जानती है। ऐसे नहीं कहेंगे, परम्परा से रोगी है। नहीं, भक्ति ही शुरू होती है द्वापर से। कलहयुग का जब अंत होता है तब बाप आकर ज्ञान देते हैं। ज्ञान है ही ज्ञानसागर के पास। ज्ञान का सागर, नॉलेजफुल– यह उस बाप की ही महिमा है। मनुष्य सृष्टि का बीज है, बाप है। सर्वव्यापी कहने से वह बाप–बच्चे का लव नहीं रह सकता। साधु–संत आदि कोई भी बाप को नहीं जानते हैं। यह है ऑरफन दुनिया। सब आपस में लड़ते–झगड़ते रहते हैं; इसलिए इसको रौरव नर्क कहा जाता है। ऐसे नहीं कि कोई नदी है, जिसमें बिच्छू–टिंडन जाए बनते हैं। नहीं, इस समय के मनुष्य बिच्छू–टिंडन हैं; क्योंकि पतित हैं। बरोबर साधु लोग भी कहते हैं– नारी नर्क का द्वार है। तो ज़रूर नर भी नर्क के द्वार ठहरे। भारत स्वर्ग था, अब नर्क है। यह किसको भी पता नहीं पड़ता। हम नर्कवासी हैं तो ज़रूर नर्क .... ट्रांसफर हुआ; परन्तु ऐसे नहीं कि नर्कवासी पुनर्जन्म फिर स्वर्ग में ले सकते हैं। पुनर्जन्म सब नर्क में ही लेते हैं। नर्क को ही पतित दुनिया कहा जाता है। सन्यासी न पावन दुनिया, न निर्वाणधाम जा सकते। निर्वाणधाम है हम आत्माओं का स्थान, जिसको निराकारी दुनिया कहा जाता। आत्मा इमॉर्टल है, शरीर मॉर्टल है। आत्मा को एक शरीर छोड़ दूसरा लेना पड़ता है। 84 जन्मों का भी गायन है। 84 लाख जन्म कहना भी गपोड़ा है। बाप समझाते हैं जो भी आत्मा

पार्ट बजाने आती है, आकर ऑरगन्स में प्रवेश करती है; परन्तु सबके 84 जन्म तो हो नहीं सकते। सतयुग में जो देवी–देवता होंगे उनके ही 84 जन्म होंगे। बाप कहते हैं आगे भी कहा था, तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो, मैं बतलाता हूँ। तुम हो ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ। वास्तव में तो प्रजापिता ब्रह्मा की तो सब औलाद हैं न। तुम हो ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। अच्छा, ब्रह्मा का बाप कौन है? शिव। ब्र०वि०शं० हैं शिवबाबा के बच्चे। उन्हों को भी अपना सूक्ष्म शरीर है। प०पि०प० को अपना शरीर नहीं है। बाबा कहते हैं, मेरा नाम ही शिव है। भल कोई रुद्र कहते, कोई सोमनाथ कहते हैं। हूँ तो मैं निराकार। बरोबर भारत में शिव का मंदिर भी है। ज्ञान का सागर प०पि०प० को कहा जाता है, कृष्ण को नहीं कहेंगे। वह तो सतयुग का प्रिन्स है। उनमें भी आदि–मध्य–अंत का ज्ञान है नहीं। सतयुगी देवी–देवताओं में भी ज्ञान नहीं है; इसलिए यह परम्परा नहीं चल सकता। बेहद का बाप ही बैठ सृष्टि के ड्रामा का आदि–मध्य–अंत का ज्ञान देते हैं। बाप ही समझाते हैं– बच्चे, अब हम तुमको ज्ञानमार्ग बतलाता हूँ। तुम्हारे में कोई नॉलेज नहीं है। आत्मा सो परमात्मा कहना, यह तो झूठ बात है। सर्वव्यापी के ज्ञान ने ही तुमको कौड़ी तुल्य, ऑरफन बनाया है। तुम जानते हो, अभी फिर हम हीरे तुल्य बनने पढ़ रहे हैं। प०पि०प० के सिवाय कोई राजयोग सिखलाय न सके। कृष्ण तो मनुष्य था। इनको परमात्मा नहीं कह सकते। ब्र०वि०शं० भी देवताएँ हैं। प०पि० सिर्फ एक परमात्मा को ही कहा जाता है। प०पि०प० माने परमात्मा। उस परमात्मा बाप को सब भूले हैं। सन्यासी भी नेती–2 कह देते हैं, परमात्मा का अंत नहीं पाया जाता, वह बेअंत है। शिवोअहम्, तत् त्वम् कहना– (य)ह तो बिल्कुल ही रॉंग है; परन्तु इस समय सब पतित बन गए हैं। देवताएँ भी पतित बन गए हैं तो इस्लामी, बौद्धी आदि जो भी हैं सब पतित, तमोप्रधान हैं। बाप कहते हैं ये सारा वैराइटी मनुष्य सृष्टि का झाड़ तमोप्रधान, रोगी, दुखी है। भारत कितना ऊँच था! अभी तो कंगाल है। शास्त्रों में तो लाखों वर्ष कल्प की आयु दिखा दी है। समझते हैं, कलहयुग को अभी 40 हज़ार वर्ष चलना है। बाप समझाते हैं, इन विद्वानों–पंडितों ने सबको बिल्कुल ही घोर अंधियारे में डाल दिया है। ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अंधेर विनाश। बाप है ज्ञानसूर्य। वही आकर घोर अंधियारे को हटाते हैं। अभी ब्रह्मा की रात है। सतयुग–त्रेता को ब्रह्मा का दिन कहा जाता है। तो तुम हो ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ, ब्रह्मा के बच्चे। ब्रह्मा तो विश्व अथवा स्वर्ग का रचता नहीं है। निराकार हैविनली गॉड फादर की ही महिमा है। तो वर्सा बाप से ले रहे हो। वह बाप ही आकर भारत को राजयोग सिखलाते हैं। बाप कहते हैं, "हे बच्चे!" यह आत्माओं से बात करते हैं, आत्माओं को कहते हैं। आत्मा ही सब कुछ सुनती, धारण करती और संस्कार ले जाती है। जैसे बाबा ने समझाया, लड़ाई के मैदान में मरते हैं, तो उन संस्कारों अनुसार जन्म ले फिर लड़ाई में चले जावेंगे। इस समय सबकी आत्माएँ तमोप्रधान हैं, सब एक/दो को दुःख देते रहते हैं। सबसे बड़ा दुःख कौन देते हैं? जो तुम्हारे गुरु–गोसाई परमात्मा सर्वव्यापी की शिक्षा देते हैं। तब बाबा ने कहा है, इन सबको छोड़ो, इन सबने तुमको बेमुख किया है। गाते भी हैं, हम बच्चे हैं तुम्हारे। भल सब बच्चे हैं तुम्हारे। गॉड इज़ वन कहा जाता है। तुम सब ब्राइड्स हो, मैं हूँ तुम्हारा ब्राइडग्रुम। हे सजनियाँ! तुम बिल्कुल लायक नहीं हो स्वर्ग चलने लिए। माया ने तुमको बिल्कुल नालायक बना दिया है। यह है रावण राज्य। सतयुग में है राम राज्य। राम, शिव को कहा जाता है। अभी तुम हो ब्राह्मणवंशी। प०पि०प०, जो स्वर्ग की स्थापना करते हैं, उनसे तुम वर्सा ले रहे हो। भारतवासियों को वर्सा मिल रहा है माताओं द्वारा। कलश माताओं पर रखा है। माता गुरु बिगर किसका कल्याण नहीं होता। जिसके लिए गाते हैं त्वमेव माताश्च पिता... उनको फिर सर्वव्यापी

कहना, कितनी नॉनसेन्स है! मात–पिता को फिर बेअंत कह देते। पहले नम्बर की मूर्खता है। ''तुम मात–पिता हो'' यह महिमा सारी है पारलौकिक मात–पिता की। महिमा भी करते, फिर भी कहते– सर्वव्यापी है, बेअंत है। कितने पत्थरबुद्धि बन पड़े हैं! बुद्धि पर जैसे गॉडरेज का ताला लगा हुआ है। बाप कहते हैं कितना बेसमझ बन गए हैं! रावण ने ऐसा बेसमझ, दुखी बनाया है। तुम गाते भी हो, तुम मात–पिता हम बालक तेरे, तेरी कृपा ते सुख घनेरे। फिर बाप पर दोष कैसे रखते हो? बाप तो आकर पतित से पावन बनाते हैं। पतित रावण बनाते हैं। अभी रावण राज्य खत्म हो, राम राज्य फिर शुरू हो जावेगा। चक्र को अच्छी रीति समझना है। बेहद की हिस्ट्री–जॉग्राफी बेहद का बाप ही सुनावेगा। यह है रुद्र ज्ञानयज्ञ। कृष्ण का यज्ञ नहीं है। है वही गीता का राजयोग; परन्तु कृष्ण ज्ञान नहीं देते, शिव भगवानुवाच व श्री रुद्र भगवानुवाच्य। रुद्र ज्ञान यज्ञ से ही विनाश ज्वाला प्रगट हुई है। अभी तुम बच्चे आए हो मात–पिता से बेहद का वर्सा लेने। यह कोई अंधश्रद्धा नहीं। यूनिवर्सिटी व कॉलेज में कोई अंधश्रद्धा होती है क्या! यहाँ पर अंधश्रद्धा की बात नहीं। तुम बाप से बेहद का वर्सा लेने अर्थात् मनुष्य से देवता बनने आए हो। यह गॉड फादरली यूनिवर्सिटी है। फादर है, फादर को बेअंत व सर्वव्यापी थोड़े ही कहा जाता। इस अज्ञान ने ही घोर अंधियारा कर दिया है। बाप कहते हैं– मैं आकर पतित से पावन बनाता हूँ और इन्होंने फिर मुझे कुत्ते–बिल्ले, पत्थर–ठिक्कर सबमें ठोक दिया है। मेरी भी ग्लानि तो देवताओं की भी ग्लानि की है। बाप समझाते हैं, यह भारत दैवी राजस्थान था। हीरे–जवाहरों के महल बनते थे। भक्तिमार्ग में भी सोमनाथ का मंदिर कितना बड़ा बनाया है। उनसे पहले क्या होगा! अभी तो भारत कंगाल है। फिर सिरताज बनाना बाप का ही काम है। अभी तुम जानते हो, हम मात–पिता के सन्मुख बैठे हैं और 21 जन्मों का सुख पाय रहे हैं। बाप कहते हैं– हे आत्माओं, अब तुम मुझे याद करो। मैं तुम्हारा गाइड हूँ और लिबरेटर हूँ। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी कैसे रिपीट करती है, यह तुम बच्चों को समझाया जाता है। इसमें अंधश्रद्धा की कोई बात नहीं। तुम्हारा है सतोप्रधान, बेहद का सन्यास। तुम पुरानी दुनिया को बुद्धि से छोड़ते हो; इसलिए बाप कहते, सर्वधर्मान्.... देह सहित देह के जो भी संबंध हैं सबको भूल अपन को नंगा समझो। नंगा अक्षर सुन वह फिर नागे बन गए हैं। बाप कहते हैं, इस देह का भान छोड़ो। मुझ बाप को याद करने से ही तुम्हारी पाप भस्म होंगे। निरंतर मुझे याद करो, और कोई उपाय नहीं। अंत तक याद करना है। मायाजीत, जगतजीत बनना है। माया पर जीत एक शिवबाबा ही पहनाय सकते हैं। अच्छा, आज है सत्गुरुवार। अब बाप शिव–शक्तियों द्वारा भारत पर अविनाशी बृहस्पत की दशा लाते हैं। दिन–प्रतिदिन बाप मुख्य रहस्य सुनाते रहते हैं। कहते हैं, मैं इस तन का लोन लेकर, इनका नाम ब्रह्मा रखता हूँ। तुम बी०के०कुमारियाँ वर्सा लेते हो शिवबाबा से। याद भी शिवबाबा को करना है। वह कहते हैं, मेरा नाम एक ही शिव है। तुम भी आत्मा हो; परन्तु तुम शरीर लेते हो, छोड़ते हो; इसलिए जन्म बाए जन्म तुम्हारे नाम बदलते हैं। 84 जन्म लेंगे तो 84 नाम पड़ेंगे। सबके तो 84 जन्म नहीं होंगे। कोई के 80, कोई के 60, कोई के 5–10 भी जन्म हो सकते। मेरा एक ही नाम शिव है। शिवबाबा को याद करते रहो तो विकर्म विनाश होंगे। अगर तुम शिवबाबा को याद न करते हो तो वायुमंडल खराब करते हो। योग अग्नि बिगर कोई पावन नहीं बन सकते। तुम बनते हो हंस, दुनिया है बगुले, एक/दो को ज़हर पिलाने वाले। तुमने प्रतिज्ञा की है– बाबा, हम पवित्र रहकर, भारत को पवित्र बनाए फिर राज्य करेंगे। सिर्फ एक बाप को ही याद करेंगे। बाप भी कहते हैं– मेरे को याद करने से तुम पावन बनेंगे। शिवबाबा को याद न करने से अपन को पतित बनाते हैं। इसलिए सदैव अशरीरी हो बैठो। अगर यहाँ तुम पावन न बनेंगे तो फिर धर्मराज की बहुत कड़ी सज़ा खावेंगे। तुम पर बड़ी रिस्पॉसिबुलिटी है। बाप को याद करते रहना है। यह है रूहानी यात्रा। बाप ही सुप्रीम पंडा। कहते हैं– माम् एकम् याद .... (अधूरी मुरली)